अपने सपनों को स्थितियों का दास न बनने दें

सद्युग जगती वासुदेव इ.

अक्षर लोग उन्हीं चीजों के पीछे भागते हैं, जो आसानी से हासिल हो जाएं। ऐसा करते समय वे यह नहीं देखते कि उन्हें वाकई उसकी जरूरत है या नहीं, या फिर वे वाकई उसे अपनी जिंदगी में चाहते हैं या नहीं। उनके लिए बस इतना ही काफी है कि वह चीज आसानी से उपलब्ध है।

अगर आप कोई फैसला मन-मस्तिष्क पर छोड़ दें तो और उसे ही चुनाव करने दें तो, वह हमेशा आपको यह बताता है कि साधारण चीजें ही होती समझी हैं।

दिकट कहते हैं कि हम अक्षर अपनी मौजूदा स्थिति के आधार पर ही अपनी जिंदगी संवारने की कीमत करते हैं।

लेकिन मुदा यह नहीं है कि इस वक्त हमारी वर्तमान स्थिति काय है। कल हम जहां जाते हैं, उसके अपनी वर्तमान स्थिति से जोड़ा जाना नहीं है।

हम अपने जीवन में सिखे सवोच्च के रूप में चाहते हैं, उसका हमारी वर्तमान स्थिति के साथ कोई वातावरण होना जरूरी नहीं है।

अगर आपने सपनों को अपनी वर्तमान स्थिति का दास बना दें, तो एक बार फिर हम मात्र उसी से सुलग हो जाएंगे जो हमारी पहुँच में होगा, जो आसान होगा, जो हमें संभव लगेगा।

अगर ईंतक के पास यह सोच या नजरिया है कि वह अपने और अपने आसपास की दुनिया के साथ क्या करना चाहता है, तो अपनी सोच की हंगामत में बदलना उसके लिए काफी मुश्किल नहीं है। उसकी यह सोच इस जीवन में पूरी हो सकती है या उसे पूरा होने में कई जीवन भी लग सकते हें, लेकिन हम जो चाहते हैं, उसका होना तय है। अगर व्यक्ति का अपने जीवन के प्रति नजरिया पूरी तरह से स्थायी और वह जीवन का हर पल इसमें लग देता है, तो जीवन की सवोच्छ चीज़ खुद ब खुद उसे उपलब्ध हो जाएगी।

दरअसल, मुख्य उलझनों से भरा हुआ है। अपना अधिकारिक समय वह यह सोचने में निकाल देता है कि उसकी जिंदगी में क्या नहीं होता, तो उसे वह मिल जाता, जिससे वह चाहता है। इस निगेटिव सोच के चलते होता यह है कि उसे जो चाहिए, वह उसे कभी नहीं मिल पाता।

नकारात्मक सोच व इच्छाशक के अभाव को जवाब देने के लिए अपने आप की दुनिया की उसे विकृत समझ ही मिलती है।

अपने जीवन की भी सवोच्छ मानते हैं, उसे ही पाने की कोशिश करें। यह सोच ही अपने आप में मुक्तिकाल और आनंदवादक है।

बात यह नहीं है कि आपकी सोच कल पूरी होगी या सी साल बाद। लेकिन अपने पास एक सोच है और आपको इसकी परवर पहले नहीं है कि वह संभव है या नहीं, यह आसान है या मुश्किल, उसे पाने जा सकता है या नहीं।

दूसरे शब्दों में, आपको उसकी तरह की परवर नहीं है। बात सिर्फ इतनी ही कि आपको पास एक सोच है और आप उसके लिए अपनी जीवन समर्पित कर दें तो। यह सवोच्छ को पाने का सबसे आसान तरीका है। पूरी गीता इसी पर आधिरत है कि जो आप चाहते हैं, उसके लिए अपने आप को समर्पित कर दो, बिना इस बात की परवरियां किए वह होगा या नहीं। यह अपने आप में एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है।

अपनी आत्माकृति और वास्तविकीय चीजों के पैदा करने के लिए यह सोच एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

यह इस बात के लिए है कि हम असल में चाहते हैं -यहीं यक्ष के पास एक उद्देश्य पूरा करने का। अगर आप पर्याप्त ध्यान से सुनते हैं, तो आपकी सोच ही यथायोग्य सोच बन जाएगी। इस मूल्य पर शेष चीजों उसके अनुकूल हो या न हो, यह महत्वपूर्ण है। जीवन की झिंक का यह सबसे सरल तरीका है।

किसी तरह और संस्कृति की महत्ता उसके अंदर ही होती है, उस भविष्य में होता है जिसकी हम संवारने चाहते हैं और उसके लिए भरपूर कोशिश करते हैं। आये हम इस साकार कूह।

(ईशा फांडेशन के सौजन्य से)